29/4/20

Date 11/04/19

(1)

भूमि सुधार

Land Reform

भूमि सुधार का तात्पर्य 'अतिरिक्त भूमि' के पुर्नवितरण से लिया जाता है। खेती की जोतों पर अधिकतम सीमा का निर्धारण छोटे किसानों और भूमिहीन मजदूरों के मद्देनजर लिया गया था। विस्तृत दृष्टिकोण से देखें तो भूमि सुधार का तात्पर्य सिर्फ भूमि का पुर्नवितरण नहीं बल्कि भूमि सुधार और खेती सम्बन्धी संस्थाओं का विकास भी था। इसके अन्तर्गत किरायेदारी, खेती के लिए ऋण, सहकारी संस्थाएँ, सम्बन्धित शिक्षा, मार्केटिंग और सुझाव सेवाएँ भी शामिल थीं। गुन्नार मिर्डाल ने अपनी पुस्तक "Asian Drama" में कहा है "भूमि सुधार व्यक्ति और भूमि के बीच एक नियोजित और संस्थागत पुर्नगठन है।" भूमि पर मालिकाना हक और किरायेदारी के लिए कोई भी पुर्नगठन तब तक सफल नहीं हो सकता, जब तक इसके लिए नियोजित पॉलिसी न बनाए जाए।" भूमि सुधार को सामाजिक और आर्थिक संदर्भ में देखें तो उसमें मशीनी-करण की भी आवश्यकता है। चूँकि आजादी के बाद कांग्रेस सरकार खेती के क्षेत्र में ढाँचागत परिवर्तन लाने के लिए प्रतिबद्ध थी। इसीलिए पण्डित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समीति बनाई गयी जो कृषि के क्षेत्र में सुधार कार्यक्रमों में लागू किया गया। कुछ मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं :- I. राज्य खेतिहर के बीच से सारे बिचौलियों को हटाया जाए। सारे दलालों और बिचौलियों को हटाकर उनके स्थान पर सहकारिता की अवधारणा हो जिसके अपने कोई हित में न हो,

II. भूमि को रोजगार के संसाधन के रूप में विकसित किया जाए, भूमि पर जो भूमिस्वामी खेती नहीं कर रहे हैं उस खेती का अधिकार सहकारिता के माध्यम से है। इस शर्त के साथ ही जब वे स्वयं खेती करना चाहेंगे तो उन्हें या उनके उत्तराधिकारियों को भूमि पर खेती का अधिकार वापस मिल जाएगा।

Scanned with CamScanner

Date __/__/__

III. जोतों का अधिकतम आकार निर्धारित होना चाहिए। इस अधिकतम सीमा से अधिक भूमि को "गाँव सहकारी संस्थाओं के माध्यम से अधिग्रहण कर लिया जाना चाहिए।

IV. छोटी जोतों को बढ़ाया जाना साथ ही उनका और अधिक छोटा होना (बँटवारा) रोका जाना चाहिए।

जब योजना आयोग के सुझाव के मुताबिक नियोजित कार्यक्रम चलाए गए तो आयोग द्वारा विभिन्न राज्यों को कई सुझाव दिए गए जो इस प्रकार से है। भू-पट्टेदारी में सुधार II. भू-प्रतिबन्ध III. बिचौलियों का समापन IV. जोतों की चकबंदी V. भूमि का व्यवस्थित रिकॉर्ड रखना।

भूमि सुधार से सम्बन्धित अपने महत्वपूर्ण अध्ययन में पी०सी० जोशी ने कहा कि "खेतिहर किसानों के हित के बजाय भूमि सुधार कार्यक्रम प्रायः बड़े दबाव समूहों के हितों के लिए काम कर रहे है। भूमि सुधारों के फलस्वरूप गाँवों में कुछ ऐसे समूह इस प्रकार से है:—

1. बड़े भू-स्वामी :— सबसे ऊपर उन जमींदारों के हित है जिन्होंने भूमि सुधार को अपने व्यक्तिगत खेती के अन्तर्गत समाहित किया है। अपनी जमीनों से किरायेदारों को हटा दिया है। यह विभिन्न राज्यों में अलग-अलग तरीकों से हुआ है।

2. अमीर किसान :— जिन किरायेदारों के पास बड़े जोत या खेत है और आर्थिक रूप से भी सम्पन्न है। नये भूमि कानूनों के अन्तर्गत वे अपनी स्थिति को और मजबूत कर ली। किरायेदारी नियमों के सुधार के चलते यह वर्ग सर्वाधिक लाभान्वित हुआ है।

3. छोटे किरायेदार :— यह छोटे जोतों वाले सर्वाधिक पीड़ित किसानों का समूह है। भूमि

Date ___/___/______

सुधारों के बावजूद इनकी स्थिति में कोई विशेष फर्क नहीं आया है भूमि पर किरायेदारी के हक में है और इस मुनाफे में इनकी स्थिति में कोई फर्क नहीं आया अन्तर इतना है कि पहले इनका अधिकार सम्बन्ध सीधे जमींनदार से था अब राज्य से है।

4. स्वेच्छा किरायेदारी :— खेती में बौलवार वाले लोग और खेतिहार मजदूर, इस श्रेणी में सबसे नीचे स्वेच्छा किरायेदार, खेतिहार मजदूर, खेती के उपज में हिस्सा धारक लोग जिनका भूमि पर कोई हक नहीं है जबकि भूमि पर वास्तव में खेती वही करते है जहाँ जनसंख्या घनत्व ज्यादा है वे अपनी छोटी जोतों के साथ-साथ दूसरों के जमीनों पर भी कार्य करते है बिना किसी लाभ या स्वेच्छा के।

Date 12/04/19

✓ भूमि सुधार विधेयक का समाजशास्त्रीय महत्व (Land-Reform)

भूमि सम्बन्धी कानूनों में अनेक सुधार किए गए है स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत एक निश्चित दिशा में भूमि सुधार किया गया है इन सुधारों के निम्नलिखित समाजशास्त्रीय महत्व है :—

1. शोषक वर्ग का अन्त :— जमींनदारी उन्मूलन से शोषक वर्ग का अन्त हो गया है परंपरागत अधिकारों के कारण जमींनदार स्वतंत्र हो गए थे और वे हर प्रकार का शोषण किया करते थे। जिससे सबसे अधिक आर्थिक शोषण होता था। जमींनदार लोग मनमाना पैसा वसूलते थे और किसी को भी आर्थिक दृष्टि से ऊपर नहीं उठने देते थे। वे कमजोर वर्ग के लोगों को बन्धक रखते थे और उनके साथ मनमानी करते थे इसके लिए वे साम, दाम, दण्ड, भेद इन चारों का उपयोग वे सजा के रूप में करते थे। जमींनदारी उन्मूलन से उनकी अधिकार अब छीन गए है वे अब शासक वर्ग के रूप में नहीं है। अब सरकार ने बन्धक व्यक्तियों को मुक्त करवा दिया है और बेरोजगारी

Page No. ___

Date ___/___/_____

प्रथा का अन्त कर दिया है इस प्रकार से ग्रामीण क्षेत्र में सभी प्रकार के शोषण को समाप्त करने के लिए कठोर कदम उठाए यह समाजवाद की एक प्रगतिशील कदम है।

2. मध्यम वर्ग की वृद्धि :— जमींनदारी उन्मूलन के कारण अब ग्रामों में भी अब मध्यम वर्ग की वृद्धि हो रही है। पहले यह तो अत्यधिक अमीर जमींदार थे या गरीब किसान थे अब जमींनदार एक मध्यम वर्ग का किसान है अन्य समृद्धिशाली किसानों की भाँति जीवन व्यतीत करता है। जिन किसानों को जमींनदार आगे नहीं बढ़ने देता था, अब ऊपर उठ सकते हैं इस प्रकार मध्यम वर्ग की वृद्धि हो रही है।

3. बेकारी का अन्त :— बेकारी उस श्रम को कहते हैं जो दबाव में बिना कोई मजदूरी दिए करवाया जाता है। जमींनदार गरीब किसानों से बहुत अधिक काम बिना वेतन के करवाते थे। अब बेकारी कानून के द्वारा समाप्त हो गयी है।

4. पिछड़े वर्गों की स्वतंत्रता का अनुभव :— पिछड़े वर्ग अर्थात वे जातियां जो कोई निम्न पेशा करती थी या अनुसूचित जाति की थी उन्हें जमींनदारी के दबाव में गुलामों का जीवन व्यतीत करना पड़ता था। वे एक मानव के समान रह भी नहीं सकते थे उन्हें तरह-तरह से प्रताड़ित किया जाता था। अब वे स्वतंत्रता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

5. किसानों की सुरक्षा :— अब किसानों को अनेक प्रकार की सुरक्षा है वे अपनी भूमि के स्वयं स्वामी है। अब इनका सरकार से सीधा सम्बन्ध है और उन्हें कोई मध्यस्थ भूमि से बेदखल नहीं कर सकता इसके अतिरिक्त वे सुरक्षा से भी रह सकते हैं।

Scanned with CamScan

Date ___/___/___

6. आर्थिक स्थिति में सुधार :— अब किसानों को अनेक प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की जा रही है। अब जमींदारी उन्मूलन के कारण कृषकों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ है किसान अधिक अनाज पैदा करता है। अब लगान देने के बाद भी सब कुछ उसी का रहता है अब वह अपने धान को अपनी इच्छा के अनुसार स्वतंत्र रूप से क्रय भी कर सकता है। वह पक्के मकान बना सकता है। क्योंकि अब उसे रोकने वाला कोई जमींदार नहीं है।

7. नवीन सामाजिक व्यवस्था का प्रारंभ :— जमींदारी उन्मूलन एवं अन्य भूमि सुधार सम्बन्धी कानूनों के कारण एक नवीन सामाजिक व्यवस्था का प्रारंभ हुआ। यह सामाजिक व्यवस्था समानता पर आधारित है और प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है और अपनी भूमि का स्वामी वह स्वयं है। अब मनोवैज्ञानिक सुरक्षा का अनुभव सबको हो रहा है।

8. सामंतवादिता से प्रजातंत्र की ओर :— इन नए सुधारों के कारण सामंतवाद की समाप्ति और प्रजातंत्र का प्रारंभ हो गया है इसे हम समाजशास्त्रीय भाषा में प्रजातंत्र का प्रथम चरण कह सकते है।

Stop END

Scanned with CamScan